JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"धर्मवीर कृत 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के पात्रों में चित्रित प्रेम की पीर की अभिव्यंजना"

डॉ.गीता संतोष यादव

सहायक प्राध्यापिका एस.एम् आर.के महिला महाविद्यालय नाशिक.

तथा

सुश्री. रूपाली करुणाशंकर मिश्रा

मुख्य शब्द : मानसिकता ,अभिव्यंजना ,मांसल, विवेकपूर्ण,गुनाहों का देवता,चंदर,सुधा|

प्रस्तावना – धर्मवीर भारती का उपन्यास गुनाहों का देवता में सुधा और चंदर के पवित्र प्रेम की कथा है तथा पम्मी त्रिकोणीय प्रेम का अंश बन इस कथा में प्रवेश करती है| सुधा से अपने प्रेम की बात चंदर अपने आदर्शो के कारण नहीं कह पाता है तथा अपने प्रेम का त्याग कर वह सुधा की शादी कैलाश से करवा कर स्वयं प्रेम की पवित्र ज्वाला में जलता रहता है| जिसके कारण चंदर मानसिक एकांत कि खोज में पम्मी के पास पहुँचता है | जो खुद शारीरिक वासना की तलाश में अपना जीवन व्यतीत कर रही है|चंदर के ह्रदय में प्रेम की परिभाषा बदल कर पवित्रता से वासना रूपी प्रेम में परिणित कर चंदर को प्रेम का नया पाठ पढ़ा जाती है| परन्तु सुधा की शादी से चंदर वासनालिप्त रूपी प्रेम का स्वीकार कर अपने जीवन का विकास कर विनाश की ओर बढ़ता जाता है | सुधा के प्रेम को स्वीकार ना कर वह गुनाहों,में घिर जाता है |इसलिए उसे गुनाहो का देवता उपाधि दी जाती है|चंदर के मन में सुधा के प्रति जो पवित्र प्रेम था| उसे वह सदा के लिए खो बैठता है |भारती जी ने हिंदी साहित्य में अत्यंत दुखांत प्रेमकथा लिख कर इस उपन्यास को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है |

सारांश : धर्मवीर भारती का उपन्यास गुनाहों का देवता यह एक काल्पनिक कथा न हो कर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के एक रिसर्च स्कालर की वास्तविक कथा है | भारती जी ने इस उपन्यास में साधारण प्रेमकथा को एक उच्च स्तर के पवित्र प्रेमकथा के रूप में प्रस्तुत किया है| त्रिकोणीय प्रेमकथा के माध्यम से इस कहानी में सुधा और चंदर ,पम्मी डीक्रूज कि प्रेम कथा को भारती जी ने पात्रों के माध्यम से पाठकों के ह्रदय में अमिट छाप छोड़ने में कोई कसर नहीं छोडी है | भारती जी ने इस उपन्यास में लोककथात्मक शैली का प्रयोग कर इस उपन्यास को सरस बनाने का सफल प्रयास किया है | धर्मवीर भारती के हिंदी में सर्वाधिक पढ़े जानेवाले उपन्यासों में से यह एक हैं |यह उपन्यास सन् १९४९ में प्रकाशित हुआ तथा इस उपन्यास के सौ से भी अधिक संस्करण छप चुके है

| भारती जी ने इलाहाबाद के वातावरण तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि के साथ- साथ प्रकृति का बेहद सौकुमार्य वर्णन प्रस्तुत किया है | भारती जी का यह उपन्यास ज्ञानपीठ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित है | आज भी इस उपन्यास की प्रासंगिकता में कोई परिवर्तन नहीं आया है|

उद्देश – १-उपन्यास के पात्रों के मध्यम प्यार और बलिदान का सामंजस्य स्पष्ट करना |

२-उपन्यास में वर्ग संघर्ष कि सामाजिक समस्या स्पष्ट करना |

३-उपन्यास में आदर्शवादी ,पवित्र प्रेम तथा वासना ,तृष्णा रूपी प्रेम को दर्शाना |

उपन्यास के सहारे ही घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है तथा उपन्यास में कथावास्तु, चरित्र ,वातावरण के माध्यम से कथा बुनी जाती है | उपन्यास पूर्ण रूप से शरीर का निर्माण करती है , तो उनकी घटनाओं के सहारे ही कथावस्तु बुनी जाती है | उनके पात्रों के सहारे ही उपन्यास रूपी शरीर कथा को गति तथा सजीवता प्रदान होती है तथा जितना पात्र जीवंत ,सक्रिय होगा उपन्यास उतना ही प्रभावशाली होगा |

" धर्मवीर भारती जी का उपन्यास 'गुनाहों का देवता' बहुत ही सरल ,स्निग्ध और मार्मिक है| इसमें गुलाब की सुकुमार पंखुडियों कि भाँति ही जीवन का विकास और विनाश हुआ दिखाई देता है और हम सोच ही नहीं पाते कि इसे कैसे रोका जाए |बिनती और चंदर के विवाह की शाहनाईयाँ हम नहीं सुनते एवं वह प्रेम की पावन धारा में विलीन हो जाती है| भारती जी का कथानक साफ –सुथरा , सुष्ठ और संतुलित है | यहाँ सबसे बड़ी सफलता भारती जी को इस बात में मिली है ,कि उन्होंने घटनाओं और अंतर्द्वंद का सामंजस्य बड़े सुन्दर ढंग से किया है |"[१] उपन्यास का नायक चंदर तथा सुधा की एक साधारण कथा है परंतु भारती जी ने इसमें सजीवता रुपी प्राण भरकर प्रभावपूर्ण बना दिया है |चंदर डॉ. शुक्ला प्रोफ़ेसर साहब के प्रिय शिष्यों में से एक है तथा डॉ. शुक्ल भी उसे अपने बेटे के समान ही मानते हैं | शुक्ल द्वारा किये गए एहसान को चंदर कभी भुला नहीं सकता और अपने आदर्शो के कारण अपने मन की बात कभी सुधा से नहीं कह पाता है | शुक्ला चंदर के संरक्षक हैं तथा सुधा के पिता जी ने चंदर को आश्रय,स्नेह के देवता बन कर सदैव साथ दिया है तथा चंदर अपनी पवित्रता की सीमायें तोड़ चुका है | सुधा के देवतामयी रूप के कारण चंदर को अपनी पवित्रता से सदैव शुद्ध करते चली आती है |चंदर की बात को अपनी जिंदगी में सर्वोच स्थान देकर देवत्व कि उपाधि प्रदान कर सुधा ने अपने सुख दुःख का बलिदान कर अपने जीवन की खुशियों को खत्म करने में बिलकुल नहीं सकुचायी | सुधा कि चंचलता मानो चंदर के कहने में ही थमती और कार्य करती थी | चंदर संज्ञान और विवेकपूर्ण है | सुधा से प्रेम करता था ,उसकी भावनात्मक उलझनों में उलझता चला गया |अपने विकास में बाधाऐ लाता चला गया | सुधा के प्रति उसका प्रेम मांसल शारीरिक ना होकर मानसिक तथा भावनात्मक पवित्रता का प्रतिक है |जिसे हम प्लेटोनिक लव कह सकते है |चंदर अपने प्यार का त्याग कर सुधा की शादी कैलाश मिश्रा से करने के लिए सुधा

को शुक्ला के कहने पर राजी करवाता है |सुधा ने अपने आप को चंदर से दूर तथा उसके स्नेह की छाया में अपने आप को ना देखने का भी दुस्साहस कभी नहीं किया था |अत्यंत वेदना दोनों पक्षों को सुधा और चंदर को होने पर भी, चंदर सुधा को कैलाश से शादी के लिए राजी कर लेता है | सुधा की बुआ जी की बेटी बिनती को लेकर सुधा के यहाँ आती है | बिनती का चरित्र अत्यंत व्यावहारिक तथा सुकुमार गुलाब की भाँति है, तथा सुधा के अत्यंत करीब थी|

भारती जी ने इस उपन्यास में भक्ति आधारित प्रेमकथा लिखी है ,जिसमे सुधा और चंदर दोनों ही एक दूसरे को देवता और भक्त की भाँति सम्मान करते हुए दिखलाया है | सुधा और चंदर अपना दिल एक दूसरे को ना जाने कब दे बैठे , उनको पता ही नहीं चला परन्तु कथा में मोड़ तो तब आ जाता है , जब सुधा की शादी मिश्रा से हो जाती है |चंदर सुधा के वियोग में अपने ह्रदय के अंतर्द्वंद में फँस जाता है | अपनी भावनाओ का तिरस्कार कर अपने मन में प्रेम की परिभाषा को अत्यंत संशय की नजर से देखता है|सुधा की बहन बिनती में ,चंदर को सुधा की झलक दिखती है |सुधा के वियोग में वह पागलो के जैसी जिंदगी समझता है | सुधा के विवाह उपरांत उसे यह अहसास होता है कि सुधा के लिए उसके दिल में प्रेम था | क्या वह सचमुच सुधा के स्नेह तथा प्यार , पवित्रता की छाया के बिना कुछ नहीं है | सुधा को भी उसकी शादी होने के बाद यह प्रतीत होता है ,कि चंदर का उसके जीवन में देवता से भी उच्चकोटि का स्थान था | चंदर का स्नेह , दुलार और पवित्रता के स्नेह के बिना सुधा अपना जीवन निर्वाह ही नहीं कर सकती है |चंदर प्रेम वियोग में सुधा के प्रति तथा अपने प्यार के प्रति इतना कठोर बन जाता है ,कि उसे देवता से जानवर बनने में ज्यादा देर नहीं लगी | भारती जी ने सुधा और चंदर के लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना अत्यंत मार्मिकता से करते हुए परलौकिकता तक पहुँचाना चाहा है किन्तु सुधा को चंदर,कैलाश से शादी के लिए समझाता है | “सुधा तुम एक बात सोचो ,अगर तुम सबका प्यार बटोरती चलती हो ,तो कुछ तुम्हारी जिम्मेदारी है या नहीं ?पापा ने तुम्हे आज तक किस तरह पाला |अब क्या तुम्हारा फर्ज है,कि तुम उनकी बात को ठुकराओ ?पापा को तुमसे धक्का पहुँचेगा , दूसरी ओर मेरे प्रति उनके विश्वास को कितनी चोट लगेगी यह तुम्हे शोभा नहीं देता है , क्या कहेंगे पापा कि चंदर ने तुम्हें यही सिखाया था? आज तुम शादी न करो उसके बाद पापा हमेशा के लिए दुखी रहा करे और दुनिया हमें कहा करे | तब तुम्हे अच्छा लगेगा |”२. भारती जी का उपन्यास गुनाहों का देवता सदाबहार रचनाओं में गिना जाता है| इस उपन्यास का केंद्र बिंदु ही बेमेल विवाह की समस्या को उजागर करता है | अपनी इच्छा के विरुदध किया गया कार्य कभी भी सफल नहीं होता है | बेमेल विवाह इंसान को अन्दर से खोकला कर देता है |उसकी अंतरात्मा को भी ख़त्म कर देता है |अपनी इछाओं का गला घोट कर अपनी अंतरात्मा का त्याग कर वह अपना विनाश कर गलत राह पर चल देता हैं | अपनी मन की बात को नि संकोच कह देना चाहिए | अपनी इच्छानुसार ही कोई कार्य सफल होगा यह मूल उद्देश्य है | इस उपन्यास में भारती जी ने प्रेम, भाषण , बलिदान, त्याग, भक्ति, स्नेह

तथा प्यार की नयी पवित्रता की परिभाषा को स्पष्ट करता है | भारती जी ने चंदर,सुधा तथा बिनती के बीच के संबंधों में प्रेम के माध्यम से बेमेल विवाह जैसे अत्यंत मर्मिक पक्षों को उकेरने के साथ – साथ समाज को दर्पण भी दिखाया है , कि समाज में वर्ग संघर्ष के कारण समाज के लोगो में खिन्नता तथा मानसिक हानि का शिकार बनता जा रहा है | समाज के विभिन पक्षों का उजागर किया है | ब्राह्मण में किस प्रकार सवर्णों में लड़को को अपनी लड़की नहीं सौपी जाती है , बल्कि बेंची जाती है | बिनती और बुआजी ने इस उपन्यास को गति प्रदान कर समाज में व्याप्त प्रेम को प्रदर्शित किया है ,कि लड़का कैसा भी हो परंतु वह उस ब्राह्मण जाती का ही होना चाहिए | इस वर्ण संघर्ष को भारती जी ने अपने पात्रों में सजीवता तथा प्राण डाल कर अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है |समाज में व्याप्त वर्ग संघर्ष कि समस्या को समाज के सामने रखने का साहस किया है |सवर्णों में किस तरह बिनती कि शादी झूठ बोलकर १२ वीं फेल तथा कद से नाटा ,हाथों कि एक अंगुली गायब लड़के से करवायी जा रही थी | इस वर्ण संघर्ष के साथ – साथ भारती जी ने एक और मुद्दे पर प्रकाश डाला है ,कि ग्रामीण महिलाओं में लड़की को लेकर किस प्रकार कि भावनायें होती है|जो हमें सुधा कि बुआ में बिनती के लिए दिखती है ,जो कि अत्यंत करुणा तथा हृदयस्पर्शी है | बुआ के ताने तथा एक लड़की को पालने से लेकर उसके ब्याह करने तक एक लड़की को कितना दब कर तथा किस प्रकार कि प्रताडनाओ का सामना करना पड़ता है | वह भारती जी ने इस उपन्यास में बखूबी चित्रण किया है | “ई हमरी छाती पर मूँग दरै के लिए बदी रही तौंन जमी है | भगवान कौनों को ऐसी बिटिया ना दे | तीन भावरी के बाद बारात उठ गई है , भैया ! हमारा तो कुल डूब गया |”३ .एस प्रकार कि मानसिकता देश और समाज के लिए कितनी घातक साबित होती है यह बताने कि आवश्यकता नहीं हैं | इस प्रकार बिनती को लड़की होना अभिशाप के समान लगता है | जिस प्रकार भारती जी ने समाज के रिश्ते- नाते को खूबसूरती से पेश किया है | ठीक उसी प्रकार भारती जी ने दम घुटने वाले रिश्तों के मायाजाल को भी अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है|

भारती जी ने मध्यवर्ग के बीच किस प्रकार कि मानसिकता है उसे इस उपन्यास में बताया है | चंदर कि मुलाकात एंग्लो इंडियन पम्मी डीक्रूज से होती है | जो अत्यंत खुले विचारो वाली तथा परिपक्व इसाई महिला थी | जो चंदर से उम्र में तीन साल बड़ी थी | चंदर से मिलते ही अपना दिल दुबारा दे बैठी| पम्मी एक तलाकशुदा लड़की थी, जो उस बंगले में अपने पागल प्रेमी ,भाई बर्टी के साथ अकेली रहती थी | पम्मी से भेट होने पर चंदर को एहसास हुआ कि प्रेम केवल वासना ,सेक्स ही होता है | एक शारीरिक आकर्षण है ,चंदर को पम्मी ने लेडी मार्टिन का गीत भी सुनाया था कि “मैं तुम्हे प्यार नहीं करती हूँ ना” ना जाने कौन सा नशा था पम्मी में | सुधा कहती है कि “ कपूर मै सोच रही हूँ अगर यह विवाह संस्था हट जाए तो कितना अच्छा हो | पुरुष और नारी में मित्रता हो तथा बौद्धिक मित्रता होने के साथ दिल कि हमदर्दी भी हो | यह नहीं कि आदमी औरत को वासना कि प्यास बुझाने का प्याला समझे और औरत आदमी को अपना मालिक | असल में बंधने के

बाद ही ,पता नहीं क्यों संबंधो में विकृति आ जाती है | मैं तो देखती हूँ , कि प्रणय विवाह भी होते है , तो वह असफल हो जाते हैं , क्योंकि विवाह के पहले आदमी औरत को उँची निगाह से देखता है , और विवाह के बाद सिर्फ वासना की "४ . सुधा अपने जीवन में कैलाश के साथ तथा उसके परिवार के साथ शारीरिक रूप से उपस्थित थी परंतु वह मानसिक रूप से अंतरद्वंदों ,का पहाड़ तथा घुटन बेचैनी में व्यतीत कर रही थी | एक समय भोजन कर वह अपने आप को पश्चाताप की अग्नि में झोंक देती है | साथ –साथ चंदर से दूर होकर चंदर का स्नेह खो बैठने को अपने आप को दोषी मानकर स्वयं के शरीर को कष्ट दे कर प्रायश्चित कर अंत में अपने प्राणों कि बलि चंदर कि गोद में देकर चल बसती है इस दुनिया को छोड़ कर |

अस्तु ,कह सकते हैं कि, धर्मवीर भारती जी के उपन्यास में पम्मी और चंदर के संबंधों की गहराई बताते हुए थोडी मांसल का स्पर्श तो किया ही परंतु कही भी अभद्रता का समावेश नहीं किया है| इस उपन्यास में त्रिकोण प्रेम कि बात में दो रूपों के कारण कथा प्रवाह होती है | प्रेम के लौकिक और अलौकिक प्रेम कि अभिव्यंजना हुई है | साथ ही प्रेम के दो रूपों को स्पष्ट कर प्रेम कि परिभाषाओं को प्रस्तुत किया है |भक्ति प्रेम में पवित्रता कि महक तो है ,परंतु वासना में तृष्णा रूपी महक भी कुछ कम नहीं है | भारती जी ने दोनों रूपों के प्रेम को स्वीकृति दी है | क्योंकि प्रेम में आध्यात्मिकता होने के साथ – साथ मांसल प्रेम कि गंध भी है | जिसमें शारीरिक आकर्षण का समावेश होता है | भारती जी ने सवर्णों में व्याप्त रुढियों का विरोध कर सामाजिक स्थितियों की गूढता के रहस्यों का उजागर कर इस उपन्यास की कथावस्तु बुनी है | जो अत्यंत सराहनीय है ,जो पाठक पर व्यावहारिक अनुशीलन करने में प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं |

धर्मवीर भारती का गुनाहों का देवता त्रिकोणीय प्रेम का प्रतीक है | जिसका अंत अत्यंत मार्मिक और दुखांत है | इसे ट्रेजडी नॉवेल की संज्ञा दी जा सकती है | यह उपन्यास प्रेम के अंतर्द्वंद ,वर्ग संघर्ष , स्त्री उपेक्षा का अत्यंत ज्वलंत दस्तावेज है | देवता भी और वह भी गुनाहों का अपने आप में एक विरोधाभास का प्रतीक है| क्योंकि देवता से गुनाह की अपेक्षा नहीं कि जा सकती और गुनाह करने वालो को कभी देवता का स्वरूप नहीं आँका जा सकता है | गुनाहों का देवता अर्थात चंदर कहीं न कहीं टूट –टूटकर जुडा है और जुड़कर फिर टूट गया है | उसका प्रेम जो थोड़े से साहस से काम लेने पर एक आदर्श प्रेम के रूप में प्रस्थापित हो सकता था | वह निस्संकोच मानसिकता और भीरु प्रवृत्ति के कारण तीन जिंदगियाँ स्वाहा कर डालता है | वहीँ उपन्यास को दुखांत मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है | चंदर के माध्यम से धर्मवीर भारती जी ने आदर्श प्रेम का परचम तो लहराया है किन्तु ,भावनात्मक तौर पर यह उपन्यास भारतीय मानसिकता के खोकलेपन को दर्शाता है |

----------संदर्भ :

१. राजेंद्र यादव के अठारह उपन्यास, अजहर प्रकाशन प्रा .लि .दरियागंज – १९८१,पृ-९७

२. गुनाहों का देवता:धर्मवीर भारती::प्रकाशक इलाहाबाद भारतीय ज्ञानपीठ १८ , इंस्टीट्यूशनल एरिया ,लोदी रोड ,नयी दिल्ली -११०००३ ,पृ -१०६

३.गुनाहों का देवता:धर्मवीर भारती::प्रकाशक इलाहाबाद भारतीय ज्ञानपीठ १८ , इंस्टीट्यूशनल एरिया ,लोदी रोड ,नयी दिल्ली -११०००३ , पृ - १८४

४.गुनाहों का देवता:धर्मवीर भारती::प्रकाशक इलाहाबाद भारतीय ज्ञानपीठ १८ , इंस्टीट्यूशनल एरिया ,लोदी रोड ,नयी दिल्ली -११०००३ , पृ - ८४